ओम शान्ति। बच्चों प्रति भगवानुवाच्य। ऐसे नहीं कहा जाता फॉलोअर्स प्रति भगवानुवाच्य; क्योंकि सन्यासियों के जो फॉलोअर्स हैं वो अपन को बच्चे नहीं कहला सकते। आजकल तो सन्यासी लोग भी अपन को भगवान मानते हैं; परन्तु ऐसे अक्षर नहीं कह सकते कि भगवानुवाच्य बच्चों प्रति। यह तो बाप बिगर ऐसे कोई बच्चों को कह न सके और बच्चों को वो बाप का प्यार देखने आ न सके। सन्यासियों पास जाते हैं तो वो ऐसे नहीं समझते कि यह हमारा बाप है। तुम बच्चे जानते हो परमपिता प॰ हमारा बाप है। उनसे यह वर्सा मिलना है। वो अपन को शिवोहम् अथवा भगवान कहते हैं; परन्तु फॉलोअर के लिए यह दृष्टि नहीं रहती कि यह हमारे बच्चे हैं, बच्चों को हम वर्सा दे रहे हैं। नहीं। वर्से की तो फिर एम—ऑब्जेक्ट चाहिए कि फलाणा वर्सा मिलेगा। यहाँ बाप बैठकर बच्चों को समझाते हैं। गीत में भी कहते हैं— हे भगवान! हम आपके बच्चे हैं। आधा कल्प बिछड़ कर बहुत भटके हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं; क्योंकि बच्चे ही बाप से राज्य—भाग्य लेते हैं। फिर राज्य—भाग्य गँवाए कर भटकते हैं। कब से भटकना शुरू हुआ— वो भी बाप बैठ समझाते हैं। ज्ञान से है सोझरा, अज्ञान से है अंधियारा। अब ज्ञान किसको, अज्ञान किसको कहा जाता है, यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। ज्ञान अर्थात नॉलेज। यह है बेहद के बाप का ज्ञान, जो तुम अब सुन रहे हो। इनको ज्ञान सोझरा कहा जाता, जि(स)से स्वर्ग की स्थापना होती है। दुनिया तो सारी है नास्तिक; क्योंकि बाप को कोई भी नहीं जानते। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं और सृष्टि की आदि—मध्य—अन्त का राज़, अनेक प्रकार की प्वाइंट्स देते रहते हैं। बीज और झाड़ को जानना तो बहुत सहज है, फिर भी विस्तार से समझाया जाता है। भगवान आकर ज़रूर नई दुनिया रचेंगे ना। शास्त्रों में तो बड़ा भारी रोला कर दिया है। सतयुग कहा जाता है नई दुनिया को। वो लोग सतयुग को अरबों वर्ष तक ले गए हैं; क्योंकि शास्त्रों में लगा हुआ है ना— पहले2 श्री कृष्ण सागर में अंगूठा चूसता पिपर के पत्ते पर (आ)या। उसी समय को महाप्रलय समझते हैं; परन्तु ऐसे तो है नहीं। कितने गपोड़े लिखे हैं। बाप समझाते हैं ऐसे है नहीं। तुम बच्चे जानते हो भारत में आदि सनातन राजधानी सॉवरन्टी थी। सतयुगी सॉवरन्टी को अच्छी रीत याद करें तो उनको 5000 बरस हुए। यह भारत सतयुग में राजस्थान था। सॉवरन्टी थी। अब फिर तुम बच्चे नई दुनिया सतयुग के लिए बाप से सॉवरन्टी ले रहे हो। ज्ञान और योगबल से नई दुनिया की सॉवरन्टी कैसे स्थापन होती है, यह तुम बच्चे ही जानते हो। सतयुगी सॉवरन्टी अर्थात नई दुनिया में सभी मालामाल थे। इन बातों को दुनिया नहीं जानती। बच्चे समझते हैं यह भारत ही प्राचीन देश है, जिसको सतयुग कहा जाता। सतयुग में क्या था? देवताओं का राज्य था। पहले2 आदि सनातन वो देवी—देवता धर्म था। आर्य अक्षर न कहना चाहिए। आर्य और अण आर्य सिवाय देवी—देवताओं के और कोई बनते नहीं। आर्य कहा जाता है समझदार को। बाबा कहते हैं तुम अण आर्य, बिल्कुल बेसमझ बन गए हो। पहले तुम समझदार थे। तो आर्य कोई धर्म का नाम नहीं है। बाबा कहते हैं तुम कितना समझदार थे, अब बेसमझ बन गए हो। आर्य समाजियों ने फिर अपना अर्थ उठाया है। समझते हैं हम पुराने थे। आर्य धर्म चला आता है। जैसे आजकल के ब्राह्मण लोग कहते हैं हम ब्रह्मा की सन्तान हैं। अब ब्रह्मा तो आता ही है संगम पर तो वो ब्रह्मा की सन्तान अपन को कैसे कहला सकती! ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची फिर अरबों बरस की आयु ले जावेंगे। तो आर्य नहीं लिखना चाहिए। भारत में आदि सनातन देवी—देवताओं की राजधानी थी। उन्हों को भगवान—भगवती कहा जाता था। तो भगवान—भगवती के बदली फिर आर्य लिखना राँग है। देवी—देवताओं की ही पूजा होती है। कारतक आदि में मेला लगता है तो गाते हैं भज राधे गोबिन्द..... कृष्ण को बहुत याद करते हैं। सभी कहेंगे, कृष्ण जैसा बच्चा मिले

कृष्ण को ही झूले में झुलते(झुलाते) हैं। आजकल रामचंद्र को भी झुलाते हैं; परन्तु लॉ ऐसे नहीं कहते। श्री कृष्ण बहुत ..... प्रिन्स था। इस भारत को कहा ही जाता है (राव) की भूमि। यहाँ दान–पुण्य बहुत करते रहते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं– मनुष्य एक तो राज्य लेते हैं बाहुबल से लड़ाई कर, यह भी तुम जानते हो, बाकी दूसरे तो सभी अंधियारे में धक्का खाते रहते हैं। तो बाबा समझाया था इनको कहा जाता है राजस्थान। आदि में राजस्थान था। अभी अन्त में है प्रजा का प्रजा पर राज्य। जब बाप आया है तब ही कौरव राज्य स्थापन हुआ है। यह कुरु राज्य भी चाहता था, तब तो बाप आए समझाते हैं। इनको कौरव राज्य प्रजा का प्रजा पर राज्य कहा जाता है। यह अभी हुआ है। जब तक पार्टीशन न था तो राजाएँ राज्य करते थे। फिर उन्होंने आकर यह काँग्रेसी कुरु राज्य स्थापन किया। कोई भी राजा नहीं है। राजाओं का राज्य सारा छीन लिया। नेपाल में बहुत अच्छे राजाएँ थे। सभी .....धारी ... वहाँ भी शुरू कर उन्हों को भगाए दिया। काँग्रेस चाहती है प्रजा को हक मिलना चाहिए। तो इनको कहा जाता है प्रजा का प्रजा पर राज्य। धर्म को तो जानते ही नहीं। गाँधी तो गीता को बहुत मानते थे; परन्तु उनको यह पता न था कि गीता से क्या हुआ। समझते थे गीता से रामराज्य नई दुनिया, नए भारत में हुआ; परन्तु वो नई दुनिया कोई गाँधी थोड़े ही बनावेंगे। गीता हाथ में उठाए फिर कहते थे पतित–पावन सीता–राम..... उनको खुद भी कुछ पता न था। वो राम राज्य तो स्थापन कर न सका। कौरवों के बाद पाण्डवों का राज्य स्थापन हुआ। तो परमपिता प॰ गीता का भगवान आकर समझाते हैं– मैं तुमको फिर से योगबल से राजाई दिलाता हूँ। इसको कहा जाता है राज्य योगबल। राजाई के लिए योग रखना। भगवान ज्ञान सुनाए राजाई देते हैं। बाबा ने समझाया था राजाई तीन प्रकार की मिलती है। यह हम योगबल से जो राज्य लेते हैं वो सतयुग–त्रेता तक चलती है। वहाँ न लड़ाई की बात होती, न कोई पैसा बहुत दान कर राजा के घर में जन्म ले सकते हैं। वहाँ भूखे गरीब कोई होते नहीं। हमको राज्य मिलता है योगबल से। वो सतयुग–त्रेता तक चलता है। फिर होता है द्वापर–कलियुग। ऐसे नहीं कि जो धर्म स्थापन करते हैं वो राज्य भी स्थापन करेंगे, जब फिर उनका घराणा अथवा झाड़ बड़ा होवे। सब राजाई लेने लिए लड़ाई करे और तब राज्य ले सके। उनको कहा जाता है बाहुबल। यह हुआ दूसरा प्रकार राजाई लेने का। अच्छा, फिर जो राजाई बाहुबल से लेते हैं, उसमें गद्दी पर कौन (होंगे)? कारण चाहिए देना। फिर जो ईश्वर अर्थ बहुत धन दान करते हैं वो आकर राजाओं के घर ज(न्म) लेते हैं। वो सतयुग में तो है योगबल से प्राप्त की हुई 21 जन्मों के लिए राजधानी और दूसरी फिर बाहुबल से राजाई अल्पकाल के लिए मिलती है। उसमें फिर वारिस चाहिए। तो उनको फिर ईश्वर अर्थ बहुत दान–पुण्य करना पड़े तब राजाओं के पास वा साहुकारों के पास जन्म ले सके। नहीं तो कैसे आवेंगे! ज़रूर ऐसे कर्म दान–पुण्य आदि करेंगे जो बहुत धनवान के पास जन्म लेंगे। गरीबों को दान देने बिगर राजा के घर जन्म मिल न सके। तो यह है ही राजस्थान। क्राइस्ट एक आया अपने धर्म की स्थापना करने। उसने कोई राजस्थान थोड़े ही स्थापन किया। जब तक झाड़ वृद्धि को न पाए तब तक वारिअर्स कैसे निकले। यह तो बाप ही आकर राजधानी स्थापन करते हैं। बाप आकर ज्ञान और योग सिखलाते हैं। इनमें तकलीफ की कोई बात ही नहीं। बहुत धन दान करने से ज़रूर राजा के पास जन्म लेंगे। तो बाप समझाते हैं अभी तुमको पूरा ब(लि)हार जाना है। वो तो करके थोड़ा दान–पुण्य करेंगे।

सन्यासी तो राजाई को मानते ही नहीं। गृहस्थ धर्म को मानते ही नहीं। तो बाप समझाते हैं इस समय बलिहार जाने से तुमको 21 जन्मों के लिए राजधानी मिल रही है। तुम एक बार बलिहार जावेंगे तो बाप 21 बार बलिहार जावेंगे। भारत में गाया जाता है वारी जाऊँ, बलिहार जाऊँ, तुम्हारे बिगर दूसरा न कोई। यहाँ तुम आकर बाप के बच्चे बने हो। जानते हो कि बेहद का बाप आकर राज्य योग सिखलाते हैं। कल्प2 संगमयुगे जबकि राजाई न है। बाप आकर देवी–देवता धर्म की राजधानी स्थापन करते हैं। तुम राजाई के लिए पढ़ते हो। इसलिए इनका नाम गीता पाठशाला रखा है। वो लोग तो शास्त्र बैठकर पढ़ते हैं, एम–ऑब्जेक्ट कुछ नहीं। यहाँ तो बाप कहते हैं मैं यहाँ राज्य योग सिखलाता हूँ। और सतसंगों में कोई एम–ऑब्जेक्ट नहीं रहती। वो ऐसे नहीं कहेंगे, हम राज्य योग सिखलाते हैं अथवा गीता से तुम राजाओं का राजा बनेंगे। कब नहीं कहेंगे। बाबा ने बहुत गुरु किए हैं। खुद भी गीता आदि पढ़ते थे। यह नहीं समझते थे कि गीता सुनाने से कोई राजाई मिलेगी। तो अब तुम राज्य योग सीख रहे हो 21 जन्मों लिए। 21 पारी गाया जाता है ना। कन्या वो जो पियर और ससुर घर का उद्धार करे। इसलिए कन्या ही पूजती है। यह रसम भी यहाँ से ही पड़ती है। कन्याओं का बहुत मान होता है। यह सब है बी.के.। बूढ़ी भी कहेंगी हम बी.के. हैं। अभी का तुम्हारा प्रभाव भक्तिमार्ग में गाया जाता है। अधरकुमारी और कुंवारी कुमारी कहा जाता है ना। यह ही कन्याएँ हैं जिनको पूजा जाता है। यहाँ माता है नहीं। सभी ब्रह्मा की बच्चियाँ हैं। कुमारियाँ हैं। कन्याओं को सभी माथा टेकते हैं; क्योंकि पवित्र हैं। फिर शादी होती है तो उनको सभी के आगे सिर झुकाना पड़ता। भारत में ही गाया जाता है– कन्या वो जो 21 कुल का उद्धार करे। तो वो कोई विकारी कन्या उद्धार नहीं करेंगी। यह तो अभी इस समय की महिमा है जो फिर भक्तिमार्ग में चली आती है। कन्याओं को खिलाते भी हैं। जब तक पवित्र है तो पूजी जाती है। अपवित्र (बनने) से सभी के आगे माथा झुकाती। बाहर का कोई विजिटर घर में आवेगा तो भी कहेंगे माथा टेको। तो अब बाप समझाते हैं तुम एक बार बलि चढ़ेंगे, मेरी मत पर चलेंगे तो मैं तुमको 21 जन्म... राज्य भाग्य दूँगा। जनक का मिसाल है ना। उसने सरेण्डर किया फिर गुरु दक्षिणा माँगी थी। कहता था हमको कोई ब्रह्मा ज्ञान दे। ब्रह्म ज्ञान नहीं। कई लोग ब्रह्माकुमारी के बदली ब्रह्मकुमारी लिख देते हैं। तुम हो ब्रह्मा कुमारी। ब्रह्मा भोजन कहा जाता। मनुष्य ब्रह्म भोजन कह देते। वास्तव में ब्रह्मा भोजन यहाँ मिलता है। शिवबाबा का भण्डारा है ना। कहा जाता है जिस भण्डारे से खाया। यहाँ इस शिवबाबा के भण्डारे से जो खाते हैं तो काल कलकट(कंटक) सब दूर हो जाते। तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो तो तुम्हारा 21 जन्मों लिए भण्डारा भरपूर हो जाता है। शिवबाबा से ही तुमको राज्य–भाग्य मिलता है। तो बाप कहते हैं अभी पूरा पुरुषार्थ कर वर्सा लियो। बीज और झाड़ को समझना है। 5 युगों को बुद्धि में धारण करना है– ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। यह वर्ण कहो अथवा कुल कहो, बात एक ही है। यह ब्राह्मण कुल ऊँच ते ऊँच है। तुम पतित को पावन, हेल को हेविन बनाते हो शिवबाबा के साथ योगबल से। तो पूरा योग रखना पड़े। इसमें फिर परहेज़ भी पूरी चाहिए। माया को जीतने और विकर्माजीत बनने का और कोई उपाय नहीं। योगबल से ही विकर्म दगत(दग्ध) होंगे। योग अग्नि कहा जाता। ज्ञान को अग्नि नहीं कहेंगे। ज्ञान तो है नॉलेज, जि(स)से फिर हम सतयुग के मालिक महाराजा–महाराणी बनते हैं। फिर विकारों में जाते हैं तो राजा विक्रम नाम पड़ता है। आधा कल्प सुख भोगते हैं। गोल्डन, सिलवर जुबली यह ड्रामा

बना हुआ है। इनसे कोई का पार्ट निकल नहीं सकता। 84 लाख वैराइटी जो भी हैं सभी का ड्रामा में पार्ट है। सतयुग में कोई दुख देने वाली चीज़ व कचड़ा आदि करने वाले जनावर आदि होते नहीं। न कोई बीमारियाँ होंगी। बीमारियाँ भी पीछे बढ़ती जाती हैं। हरेक बात में वृद्धि होती जाती है। आगे यहाँ थोड़े ही टमाटे होते थे, बाहर से मँगाते थे। अंगूर भी बाहर से आता था। स्वर्ग में फल आदि बहुत फर्स्ट क्लास होते हैं। सूक्ष्मवतन में बाबा तुमको सा० कराए शूभी रस आदि पिलाते हैं। वो चीज़ें स्वर्ग की हैं जो बाबा सा० कराए टेस्ट कराने खिलाते हैं। यहाँ आने से तो फिर वैसे के वैसे रह जाते। तो ऐसे बाबा को कितना याद करना चाहिए। भल बाबा जानता है तुम श्वासों श्वास याद न कर सकेंगे; परन्तु इतना पुरुषार्थ ज़रूर करना है जो अन्त में तुम शिवबाबा की याद में रहो। तो फिर अन्त मते सो गते हो जावेगी। यह समझने की बातें हैं। पुराने सिकीलधे बच्चे जो होंगे उनको ज्ञान का तीर लगा और चटक जावेगा। बाबा, आधा कल्प भक्ति की है। अब आप मिले हो, हम आपको छोड़ेंगे थोड़े ही। कुछ भी हो जाय; परन्तु बाबा फिर कहेंगे, अपनी रचना की भी संभाल करनी है। हम भी अपनी रचना की संभाल करते हैं ना। तुम भी संभाल करो। श्रीमत पर चलना है। राय पूछ सकते हैं इस हालत में बाबा हमको क्या ..... है। बाबा को भी जब पोतामेल का पता हो तब राय दे। सभी बच्चे पोतामेल भेजते हैं। फिर बाबा राय दे सकते हैं, इनसे कैसे बचाते रहो। बच्चों की संभाल भी तो करनी ही है। कोई2 को फिर लोभ रहता है। समझते हैं, पता नहीं कुछ हो जाय फिर हम कहाँ से खावेंगे। इसलिए कुछ तो अपने लिए रख देवें। ऐसे बहुत हैं जो आईवेल के लिए रख देते हैं कि शायद हाथ छूट जाय तो काम में आवेगा। ऐसा ख्याल करने से हाथ छूट जावेगा। एक मिसाल भी बतलाते हैं– स्त्री ने उनको कहा, सरेण्डर करो तो सभी करो। एक भी चीज़ नहीं हुई होगी तो अन्त काल बुद्धि उसमें चली जावेगी। समझो, कोई आईवेल के लिए ..... अपन पास रख देते हैं तो अन्त मते सो गते हो जावेगी। सरेण्डर पूरा किया नहीं तो वारिस बन न सके। अन्तकाल वो याद आ जावेगा। तुम बाप के बन गए तो फिर आईवेल भी वो संभाल करेंगे ना। यहाँ रहने वालों को तो यह ख्याल रखना न चाहिए। संगदोष में ट्रेटर्स की बातें सुन फिर उनकी मत पर चल पड़ते हैं। बाबा सभी बातें समझाते हैं, फिर कोई ऐसे न कहे हमको क्या पता। शिवबाबा से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। वो तो अन्तर्यामी है ना। यह बाबा तो बाहरयामी है। उनको बतलाने से समझेगा। बाकी बच्चों की चलन से भी सब कुछ समझ जाते हैं। ऐसी2 खामियाँ होंगी तो अवस्था वृद्धि को पाए न सकेंगी। एक शिवबाबा को याद करना है। कुछ रहा होगा तो अन्त मते गते हो जावेगी। फिर जन्म लेना पड़ेगा। बच्चों के(की) यज्ञ से पालना होती है तो अपन पास कुछ भी रखने की दरकार ही नहीं। कोई भी बात में मूँझ हो तो पूछ सकते हैं इसमें हमको क्या करना है? मूँझ तो सारी दुनिया की उतारनी है। जो बाप के बने हैं उनको तो मत पर पूरा चलना है, तब ही वर्सा मिल सके। प्रजा तो प्रजा है। यहाँ तुम डायरैक्ट बाप से वर्सा लेने आए हो। कोई नए बच्चे हैं भल, सतयुग में आने के अधिकारी तो हैं; परन्तु साधारण प्रजा में। यह भी समझना है, प्रजा में साहुकार कैसे बने? पुरुषार्थ तो वारिस बनने का करना चाहिए। मम्मा–बाबा कहते हो तो वारिस बनना चाहिए। दो माता–पिता तो नहीं हो सकते हैं ना। दो होगा तो प्रजा में चला जावेगा। एक माता–पिता होने से राजाई में आवेगा। बाबा सभी बातें समझाते हैं कि कब कोई अपना नुकसान न कर दे। अपन सब कुछ छोड़ते हैं भविष्य बनाने लिए। सन्यासियों को फिर लौटना पड़ा। अब देखो महल, घर आदि बना रहे हैं। हम तो इस दुनिया को ही छोड़ने वाले हैं फिर यहाँ क्या महल आदि बनाना है! कोई कहे, मकान जो बनाते हो? अरे, बच्चों के रहने लिए तो ज़रूर मकान बनाना पड़े। भटकाना थोड़े ही हैं बच्चों को। जानते हैं थोड़े समय लिए बनाते हैं फिर तो हम ही न रहेंगे। दिलवाला इतना बड़ा मंदिर है, उनकी भी लाइफ इतनी ही है जितनी तुम बच्चों की है। फिर वो ही मंदिर उसी समय बनावेंगे जब कल्प पहले बनाया था। यह मंदिर आदि सब खलास होने हैं ज़रूर। विनाश का सा॰ तो बच्चों ने किया है। अच्छा।